# परमात्म मिलन का ज़रिया... पवित्रता

स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन अर्थात् स्वयं के कल्याण से ही विश्व का कल्याण होगा। अगर हम ऐसी शुभकामनायें लेकर आगे बढ़ना चाहते हैं तो पहली शर्त ही है स्वयं का कल्याण करना। इसी संदर्भ में 'स्व' के प्रति सही मायने में अपने को जानना और उसे सच्चे रूप में समझना। अगर देखा जाये तो हम एक पवित्र आत्मा हैं, पवित्रता हमारी पर्सनैलिटी है, पवित्र रूप ही हमारी रीयल्टी है और रॉयल्टी भी।

स्व-हित के लिए पवित्रता का होना बहुत ज़रूरी है। हम इसे सूक्ष्मता से देखें, समझें व मूल में जायें तो उस निष्कर्ष तक पहुंचेंगे कि हमारी वृत्ति में क्या है। सबसे पहले हमारी वृत्ति ही वो केन्द्रबिन्दु है जहां से हमारी पर्सनैलिटी का निर्माण होता है। तब तो कहते हैं, जैसी आपकी वृत्ति होगी वैसी आपकी दृष्टि होगी और वैसी ही आपकी कृति होगी। तो मूल आधार वृत्ति है ना! वृत्ति को पवित्र करना, यही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। वृत्ति है बीज और बीज से ही तो वृक्ष निकलकर फैलता है ना! अर्थात् ये उसी की रचना हुई ना! अब हम इसे गहराई से समझते हैं।

पवित्र स्मृति व संकल्प हमें ऊर्जावान बनाते हैं। अर्थात् हम अपने को तरोताज़ा महसूस करते हैं। तो हमें अपनी वृत्ति को परखने और समझने के लिए अपने संकल्प और स्मृति को देखना होगा कि ये कैसी क्वालिटी के हैं। ये स्व-हितकारी हैं या अकल्याणकारी हैं। अगर स्व-हितकारी हैं तो पवित्रता का बल स्वयं ही स्वयं में अनुभव करेंगे। पवित्रता परमात्मा से मिलन कराने का ज़रिया बनती है। जितना हम पवित्र हैं उतना ही परमात्मा के नज़दीक हैं। पवित्रता परमात्मा का प्यारा बनने में एक श्रेष्ठ साधन है। पवित्रता अर्थात् पवित्र वृत्ति। पवित्र वृत्ति परमात्मा की दुआएं प्राप्त कराती है। न सिर्फ परमात्मा की दुआएं अपितु उसके आस-पास सारे वातावरण या साथियों के दुआओं के पात्र बनाती है।

हम विशेष तौर पर अमृतवेले परमात्मा के साथ मिलन मनाने के लिए बैठते हैं तब हम क्या करते हैं? सोचें ज़रा! यही तो करते हैं ना कि परमात्मा पवित्रता का सागर है, वो इतना प्योर है तब तो इतना शक्तिशाली है! और हम उनके बच्चे भी उतने ही प्योर हैं। यही तो करते हैं ना! परमात्मा सर्वशक्तिवान है तो हम मास्टर सर्वशक्तिवान हुए ना! अर्थात् जो परमात्मा में शक्ति व ऊर्जा है वो हममें भी है। माना हम सर्व शक्तियों के खज़ानों के मालिक हैं। ऐसी महसूसता हम विशेष तौर पर अमृतवेले करते हैं।

पर कभी-कभी हम अपने आपको देखने और जानने की कोशिश करते हैं तो अपने में कहीं न कहीं कमी-कमज़ोरी का एहसास होता है। ऐसा क्यों होता है? इस तरफ आपका ध्यान दिलाने की कोशिश करते हैं। कमज़ोरी महसूस करने के मुख्यतः तीन कारण हैं। पहला परचिंतन, दूसरा परदर्शन, तीसरा परमत। हम पुरुषार्थ के मार्ग में पवित्रता की स्मृति को व अपने स्वयं में मौजूद शक्तियों से विस्मृत हो जाते हैं तभी तो निर्बलता का एहसास होता है। परचिंतन का सीधा सम्बंध हमारी सोच से है। और सोच का केन्द्रबिन्दु हमारी वृत्ति है। जैसी वृत्ति है वैसा ही सोच व चिंतन हमारे चित्त पर आता है। वृत्ति माना वृत्त, गोल, वृत्ताकार। अगर बार-बार कमज़ोरी के संकल्प हमारे चित्त पर आते रहते हैं तो हमारी वैसी ही वृत्ति बनती जाती है। तो कहते भी हैं ना, परचिंतन पतन की जड़ है। यानी कि पतन की ओर हमें ले जाती है।

दूसरा है परदर्शन। माना पराया दर्शन। अर्थात् जो भी हम बाहर देखते हैं वो सोच व चित्र के माध्यम से हमारे मन के अंदर रिकॉर्ड होते हैं। और मन के द्वारा बारंबार ऐसा होने पर वो चित्र हमारे मानस पटल पर उभरता रहता है। उससे हमारा देखने का नज़रिया वैसा ही बन जाता है। मान लो कि हमने लक्ष्य विरोधी चित्र देखा है और उसी का मानस पटल पर बारंबार देख कर उसी की फीलिंग में रहते हैं तो हमारी वृत्ति वैसी ही बनती जाती है। उसी की टेस्ट हमें अपने अतीन्द्रिय सुख से वंचित करती है। इस जग में यदि सबसे सुंदर, श्रेष्ठ व शक्तिशाली कोई है तो सत्यम् शिवम् सुंदरम् ही है। उसके सामने सब फीके और नाशवान है। तो यदि हमें स्वयं को शक्तिशाली बनाये रखना है तो परदर्शन से स्वयं को बचाये रखना होगा।

तीसरा है परमत। परमत ने हमें कितना भटकाया है, इसके हम सभी अनुभवी हैं। शास्त्रों की मत, व्यक्तियों की मत, देहधारी गुरुओं की मत से हम बखूबी वाकिफ हैं। उससे न तो हमारा स्व-कल्याण हुआ और न ही औरों का। हम गिरते ही आये। अब परमात्मा हमें श्रेष्ठ मत दे रहे हैं क्योंकि हमारा कल्याण इसी में है और विश्व का भी। तब तो कहा, स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन। माना कि स्वयं की रीयल्टी से पर्सनैलिटी बनती और उससे रॉयल्टी आती अर्थात् व्यवहारिकता आती। तो इन सबका केन्द्रबिन्दु हमारी रीयल स्मृति, पवित्र वृत्ति ही है। हम इसे सही रूप से समझकर इसका विधिपूर्वक पुरुषार्थ व अभ्यास करते रहें तो ही विश्व परिवर्तक के टाइटल के योग्य बन पायेंगे। तो पुरुषार्थ में सम्पूर्ण पवित्रता को अपनाना ही होगा। अब इससे समझौता करना माना ही अपने आप को धोखा देना। अब समय हमारे परम कर्त्तव्य का इंतज़ार कर रहा है।

# मन की एकाग्रता के साथ बुद्धि भी क्लीन और क्लीयर हो

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

दुनिया में अगर वरदान प्राप्त करना होता है तो अपना मस्तक झुकाना पड़ता है, लेकिन वरदान लेने के लिए, वरदान का अनुभव करने के लिए हमारा मन एकाग्र होना चाहिए। अगर मन एकाग्र नहीं है, हलचल में है तो वरदान सुनने में भले बहुत अच्छा लगेगा लेकिन अन्दर उसका फल नहीं मिलेगा। वरदान लिफ्ट का काम करते हैं, मेहनत से मुक्त कर देते हैं। इसमें विशेष अटेन्शन देने की ज़रूरत है।

मन की एकाग्रता के साथ बुद्धि बहुत क्लीन और क्लीयर हो। अगर बुद्धि में ज़रा भी सफाई नहीं है तो वरदान बुद्धि में ग्रहण नहीं हो सकता। भोलानाथ बाबा को राज़ी करने की सहज विधि है, सच्चाई और सफाई। पहले सच्ची दिल से जो भी अपनी कमज़ोरी है उसे महसूस करें। पुरानी कोई भी नेचर व संस्कार है वह सब बाबा के आगे स्पष्ट हो।

अपनी कमी-कमज़ोरी को मिटाने के लिए बाबा को अपना दिलाराम समझकर महसूसता व दृढ़ता से बाबा को सुना दो - बाबा ये मेरी कमज़ोरी है, आप मिटा दो। आप मुझे मदद करो तो मैं करके दिखाऊंगी। बाबा कहता है मैं मदद तो करता हूँ, पर मिटाना तो आपको ही पड़ेगा।

सच्चाई और सफाई से हम बाबा को अपना बना सकते हैं। वो संस्कार जो मोटे-मोटे तो खत्म हो गये हैं लेकिन सूक्ष्म रूप के संस्कार पुरुषार्थ में गैलप नहीं करने देते हैं। जो मैं बुद्धि से करना चाहूँ, बुद्धि और कहाँ भटके नहीं इसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थ। नेचर, जिसको हम सूक्ष्म संस्कार कहते हैं, उसे भी अब खत्म करना है।

वरदान में बाबा कोई न कोई शक्ति ही देता है। वरदान में ली हुई शक्तियां हमारे जीवन का आधार होना चाहिए। जिस समय हमको जिस शक्ति की आवश्यकता है, उस समय वो शक्ति काम आये। बाबा ने वरदान दिया है कि सब बच्चे मेरे राज़े बच्चे हो। आप आत्मा मालिक हो इन कर्मेन्द्रियों की। हम राजयोगी हैं अधिकारी भव का वरदान दिया है। वो वरदान जिस समय चाहिए उसी समय काम में आये। मन-बुद्धि संस्कार हमारे कंट्रोल में हों।

अगर कोई पूछे कि भगवान कहाँ रहता है, तो आप फलक से कह सको कि भगवान मेरे दिल में रहता है। उसको और कोई जगह अच्छी ही नहीं लगती। लेकिन अगर आपके मन में रावण की कोई चीज़ है, तो वहाँ बाबा कैसे रहेगा! इसलिए हमारी दिल साफ, पुराने संस्कार से मुक्त होनी चाहिए। तब हम कह सकेंगे कि बाबा से जो वरदान मिला वह स्वरूप में समाया है और समय पर काम में आता है। पेपर अधिकतर उनसे ही आते हैं जिनके साथ कनेक्शन होता है। उस पेपर में हमें पास होना है। और बाबा से वरदान प्राप्त करने के लिए हमें अपनी सूक्ष्म चेकिंग करनी होगी।

# किसी को न देख मुझे अपने को देखना और जज करना है

राजयोगिनी दादी जानकी जी

जो कभी किसी को किसी प्रकार से दुःख नहीं देते हैं, उनका चार्ट अच्छा रहता है। मैं हमेशा यही ध्यान रखती हूँ कि मैं किसी को दुःख नहीं दूँ। बाबा कहते चार्ट उसका अच्छा है जिसकी बुद्धि मुरली सुनते बाहर कहीं भी न जाती हो। मुरली की गहराई में भले जायें पर और कहीं बुद्धि न जाये। दूसरी बात दुःख लेना नहीं है। मेरे से ऐसी कोई भूल न हो जो कोई को देखकर आश्चर्य लगे कि देखा यह क्या करती है? अगर मुझे कोई दुःख देने की कोशिश करे, तो भी मैं नहीं लूंगी। कोई पत्थर भी मारे, कई बार मारते हैं, परन्तु फिर भी दुःख नहीं लेंगी, क्योंकि जिस घड़ी दुःख ले लिया, वो अन्दर एक बार चला गया तो फिर वो जायेगा नहीं। फिर एक में दूसरा, दूसरे में तीसरा, तीसरे में चौथा... मेरी जीवन ही दुःखी हो जायेगी।

सारे विश्व भर में जितनी भी आत्मायें हैं, ब्राह्मणों में भी मेरे जैसा सुखी कोई नहीं। यह अन्दर से ईश्वरीय शान है। मेरे को किसी ने कभी दुःखी देखा है? नहीं ना! क्योंकि यह मेरा शान नहीं है। बाहर वाले कोई दुःख देते हैं, टेस्ट लेते हैं, यह भी हमारी स्थिति को मजबूत बनाने के लिए इशारा मिलता है। हिलती तो नहीं है? हलचल हो और हिले तो यह क्या है? अभी तो आगे चलके बहुत हलचल आने वाली है। तो अन्दर यह पक्का हो कि मुझे किसी को कभी दुःख नहीं देना है। अगर थोड़ा भी किसको दुःख दिया तो वह आजकल के हिसाब से बड़ा पाप है, इसलिए दुःख किसी को भी न दो। बाबा का घर है, दाता का दर है। परन्तु कई बार देखते हैं कि कोई हैं जो जानबूझ के किसी को दुःख नहीं देते हैं, लेकिन सामने वाला अपने स्वभाव के वश दुःख ले लेता है।

एक है पुरुषार्थ और सेवा में सफलता, दूसरा है कोई भी बात हार न खिलाये, विजयी बनूँ। हर दिन कोई बात आई होगी, परन्तु बाबा की मदद कहें अथवा अपना स्वयं का ध्यान है, जो बाबा ने कहा जो ओटे सो अर्जुन। तो हमको अर्जुन बनना अच्छा लगता है। किसी को न देख जो मुझे करना है, उसमें लग जाना है, मेरे लिए दूसरा कोई पुरुषार्थ नहीं करेगा। बाबा भी मदद तब करेगा जब मैं सच्चा पुरुषार्थ करूंगी। मैं कोई बहाना दूंगी तो बाबा मेरी केयर नहीं करेगा, क्योंकि बड़े हो गये हैं। अभी भी समझो हम समय की वैल्यू नहीं रखते, व्यर्थ चिंतन में समय गंवाते तो व्यर्थ चिंतन छोड़ेगा नहीं और ही बढ़ेगा। वास्तव में मुझे जिस बात में सोचने की ज़रूरत नहीं है, फिर भी मैं फालतू सोचूँ तो क्या होगा!

ड्रामा का ज्ञान हमें इतना मीठा बनाता है, हर आत्मा का पार्ट अपना है। बाबा हर बात की समझानी देता है, विधि बताता है, तुम बच्चे अपना सोचो। अपना चेहरा तो अच्छा रखो। तुम पहले अपने लिए अपना जज बनो, औरों के लिए नहीं। तो इस प्रकार के जो संकल्प हैं, वो शान्त, शुद्ध, श्रेष्ठ संकल्प पैदा करने में बड़ा समय व्यर्थ गंवाते हैं। तो औरों की बातों में नहीं जाओ। एक बाबा का हूँ, मैं आत्मा हूँ, ड्रामा में हरेक का पार्ट नूँधा हुआ है, हरेक पुरुषार्थ कर रहा है। हो सकता है कोई मेरे से आगे चला जाये तो भले जाये, परन्तु मैं अपने याद की यात्रा में ऐसे रहूँ, बस घर जा रही हूँ, बाबा के सामने बैठी हूँ।

# एक मूल शीश को काट दें तो दसों कट जायेंगे

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

एक बाबा की लगन कितनी प्यारी, मीठी,सुखदाई है। ऐसी लगन में मगन रहने वाले कभी किसी दूसरे की लगन में नहीं जायेंगे। अगर किसी की आपस में बहुत-बहुत प्रीत होती है तो उसे तोड़ना मुश्किल होता है। ऐसे जब बाप से हमारी पूरी लगन है, प्रीत है तो यह भी गुप्त खुशी व नशा रहता है कि हमने तो उसी बाप को पाया है। हम उसी प्यार के समुद्र की नदियां हैं। इसी को ही हम कहते हैं निरन्तर योग में रहना, यह मस्ती बड़ी निराली है। बाबा के प्यार का अनुभव करते उसी मस्ती में रहो तो दूसरी कोई भी बात सामने आ नहीं सकती। यह पुरुषार्थ की बहुत सहज विधि है।

कई योग लगाते, मेहनत करते हैं लेकिन अनुभव नहीं होता। कहते हैं मेरा एक बाबा दूसरा न कोई। यही पुरुषार्थ करते हैं कि मैं आत्मा हूँ, मेरा बाबा प्यारा शिवबाबा है, मुझे बाबा की सेवा में तत्पर रहना है। जितना समय बाबा की सेवा में जायें उतना अच्छा है। लेकिन अनुभव हो कि मैं आत्मा इस शरीर से अलग हूँ, मैं आत्मा सुनती हूँ, आत्मा बोलती हूँ, यह मेरा शरीर है। यह अभ्यास कम है। जब हमने कहा- मैं आत्मा आपकी हूँ, तो मेरा सबकुछ आपका है अर्थात् मैं बाबा को ही समर्पित हूँ। आप आत्मा एक बाबा पर समर्पित हो जाओ तो यह जो संकल्प व बुद्धि इधर-उधर भटकती है, वह भी समर्पण हो जायेगी। फिर यह कम्पलेन खत्म हो जायेगी कि क्या करूँ मन भटकता है। विचार शक्ति, बुद्धि की शक्ति को समर्पण कर दो। फिर यह भी नहीं कह सकते कि यह मेरे संस्कार हैं।

कभी किसी ने यह नहीं कहा कि बाबा का संस्कार ऐसा है, बाबा ने भी कभी नहीं कहा कि क्या करूँ मेरा यह संस्कार है तो हमें अगर बाबा के समान बनना है तो संस्कारों के वश होकर के नहीं चलना है। यह संस्कार भी बाबा के हो गये। जैसा बाप वैसी मैं, यही मेरा पुरुषार्थ है। फिर यह जो कहते कि मेरा स्वभाव, मेरे संस्कार- ऐसी अनेक प्रकार की जो माया है वह समाप्त हो जाती है। बाबा भी कहते बच्चे मोहब्बत में रहो तो मेहनत से छूट जायेंगे। जब कोई माया से युद्ध करते हैं तो तरस पड़ता है। रावण के एक-एक शीश को कब तक काटते रहेंगे। एक मूल शीश को ही काट दो तो दसों कट जायेंगे।

बाबा कहते तुम सब हो कठपुतलियां और तुम कठपुतलियों को मैंने दी है श्रीमत की चाबी। तो बाबा ने जो श्रीमत की चाबी दी है उसी अनुसार बेफिक्र बादशाह बन निश्चित हो खेल करो। लेकिन सदा समझो हम राजऋषि, राजयोगी हैं। अपना आक्यूपेशन नहीं भूलो। योगी के लिए मूल चाहिए ज्ञान से पुरानी दुनिया का वैराग्य। हम हैं योगी लोग, न कोई अपना न कोई पराया। हमें कौन जानें।

हे आत्मा तू बाबा के सामने मन-बुद्धि सहित स्वाहा हो जाओ। जब सब स्वाहा हो जायेगा तब पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग्य आयेगा। पुरानी दुनिया तब तक खींचती है जब तक समर्पण नहीं हुए हैं। संकल्प शक्ति भी समर्पण हो तो दूसरी कोई भी बात सामने नहीं आ सकती। इसी का नाम है तपस्या। तो पहले अपने आपका त्याग करो अर्थात् समर्पण हो जाओ। जब आत्मा स्वयं समर्पण हो गई फिर तपस्या करना, अशरीरी बनना बहुत सहज है।

अभी हमारी तपस्या की दुनिया को भी दरकार है। तत्वों को भी इसकी दरकार है। हम सब देख रहे हैं दुनिया की हालत दिन-प्रतिदिन गम्भीर होती जाती है, यह दुनिया की गम्भीर बातें हमें और भी प्रेरणा देती हैं कि हमें तपस्या करके विश्व को अपने साइलेन्स की किरणें देनी हैं।